पक्षधर

अंक

35

जुलाई - दिसंबर, 2023

संस्थापक संपादक : दूधनाथ सिंह : 1975

पक्षधर

प्रतिरोध की संस्कृति का रचनात्मक हस्तक्षेप

वर्ष : *17* अंक : *35* जुलाई-दिसंबर, 2023

संपादक
विनोद तिवारी

संपादन सहयोग
आशीष मिश्र
सूरज त्रिपाठी

अक्षर संयोजन

कम्प्यूटेक सिस्टम
ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
आवरण : तस्वीर : साभार–'दि गल्फ टुडे', यू.ए.ई.

मूल्य :

एक प्रति : ₹ 150 (व्यक्तिगत) ₹ 200 (संस्थागत)

सदस्यता :

वार्षिक (व्यक्तिगत) : ₹ 350 (डाक खर्च सहित)
वार्षिक (संस्थागत) : ₹ 400 (डाक खर्च सहित)
पंचवार्षिक : ₹ 2000
आजीवन : ₹ 5000
विदेश के लिए : $ 100

भुगतान हेतु बैंक-खाता विवरण :
A/c Name / No. : Pakshdhar / 31266280438
Bank : SBI / IFSC-SBIN0001067

संपादन/प्रकाशन : अवैतनिक/अव्यावसायिक

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक ***विनोद तिवारी, सी-4/604, ऑलिव काउंटी, सेक्टर-5, वसुंधरा, गाजियाबाद-201012*** के लिए बी.के. ऑफसेट, एफ-93, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 से प्रकाशित और मुद्रित।

प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। संपादक और लेखक की अनुमति के बिना प्रकाशित सामग्री के किसी भी तरह के उपयोग की अनुमति नहीं होगी।

सम्पर्क :

सी-4/604, ऑलिव काउंटी, सेक्टर-5,
वसुंधरा, गाज़ियाबाद-201012
मो. 09560236569
ई-मेल : pakshdharwarta@gmail.com
वेब पता : www.pakshdhar.com

PAKSHDHAR : **ISSN :** 2231-1173
A Bi-Annual Literary Magazine
Editor : Vinod Tiwari
Language : Hindi

अनुक्रम

संपादकीय

आज साहित्य और आलोचना से बहसें नदारद हैं 5

एक कवि : एक राग

दस कविताएँ : **बद्री नारायण** 13

पत्र

भौतिक आकारों से कहीं अधिक संस्कृति के विरुद्ध अघोषित युद्ध 22
(मणिपुरी लेखक-अनुवादक **इबोहल सिंह काङ्जम** के नाम **देवराज** का खुला पत्र)

शताब्दी

विजयदेव नारायण साही और हिन्दी आलोचना : **जीतेन्द्र गुप्ता** 29

लंबी कविता और साक्षात्कार

बोहेमियन होने की उदासी : **देवी प्रसाद मिश्र** 42

यह स्त्री लेखन किसी अपरायजिंग की तरह है/
कवि-कथाकार **देवी प्रसाद** से युवतम कवि **तनुज कुमार** की बातचीत 52

लेख

अक्क महादेवी, आज की स्त्री और सामाजिक सरोकार : **सुभाष राय** 69

हिंदी की अवधारणा : अतीत, वर्तमान और भविष्य : **रमण सिन्हा** 84

यूँ उठे आह उस गली से हम... : **बलवन्त कौर** 90

चंदायन : प्रेम के महावृत्तांत और अनुत्तरित प्रश्न : **राजकुमार** 102

कहानियाँ

एल्गोरिद्म : **कुणाल सिंह** 121

विरह में रसराज : **प्रवीण कुमार** 136

मोबियस स्ट्रिप : **कैफ़ी हाशमी** 142

खरगोश : **अरुण कुमार सिंह** 159

कविताएँ

दो कविताएँ : **अंशुल त्रिपाठी** 168

छह कविताएँ : **अदनान कफ़ील दरवेश** 177

छह कविताएँ : **रूपम मिश्र** 184

चार कविताएँ : **लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता** 192

बाहरी दुनिया

परतें और गर्त (अरब दुनिया में औरत) : **नवल-अल-सादवी** *(अनु. सुबोध शुक्ल)* 203

समीक्षाएँ

पद्मिनी : कितना इतिहास, कितनी कविता : **अवधेश प्रधान** 216

बदलते गाँव और किसान जीवन की संघर्ष-गाथा : **अरुण होता** 221

साज कलाई का राग ज़िंदगी का : यानी कि हाशिए के समाज का सच्चा दस्तावेज़ : **सरोज कुमारी** 228

सूफ़ियाना प्रेम की रंगतें : **नीरज खरे** 234

घटनाओं की आंतरिक हलचलों के आभ्यंतीकरण की कविता : **बसंत त्रिपाठी** 239

व्यवस्था 'अश्वत्थामा' हुई और व्यक्ति 'कुंजर' : **अंकित नरवाल** 249

आज साहित्य और आलोचना से बहसें नदारद हैं

यह साल, साहित्यिक बहसों, चर्चाओं, गोष्ठियों, मेलों, आयोजनों में लगभग भुला दिये गए हिंदी के कवि, आलोचक व राजनीतिक-सामाजिक कार्यकर्त्ता विजयदेव नारायण साही की शताब्दी का साल है। साही का जन्म बनारस में 7 अक्टूबर 1924 को हुआ था। उनके पिता श्री ब्रह्मदेव नारायण साही बनारस में डिप्टी कलेक्टर थे। साही के अलावा उनके चार भाई और दो बहनें थीं। उनके परिवार के अधिकांश लोग सिविल सेवा में थे। पर साही ने अपना अलग ही रास्ता चुना। साही ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में प्रथम श्रेणी प्रथम में एम. ए. किया था। उनके गुरु और तत्कालीन विभागाध्यक्ष प्रोफ़ेसर सतीशचन्द्र देव थे। सतीशचंद्र देव चाहते थे कि विजयी विभाग में ही अध्यापन कार्य करें। परन्तु आचार्य नरेंद्र देव के बुलाने पर वह काशी विद्यापीठ, बनारस में अध्यापन करने चले गए। यह अलग बात है कि बाद में वो पुनः इलाहाबाद में अध्यापक होकर लौट आए। छात्र जीवन में ही विजयदेव नारायण साही समाजवादी आंदोलन और राजनीति से जुड़ गए थे। उन्होंने भारतीय लोकतंत्र में समाजवादी चिंतन और विपक्ष की राजनीतिक-संस्कृति की धुरी रहे आचार्य नरेंद्र देव, लोहिया और जयप्रकाश नारायण के सोच-विचार और नीति को अपने लेखन, चिंतन और कर्म का आधार बनाया। साही जी कवि और आलोचक तो थे ही, सक्रिय राजनीतिक कार्यकर्त्ता भी थे। उन्होंने बुनकरों और मजदूरों की यूनियन बनाई थी। भदोही संसदीय सीट से चुनाव लड़ा था। उनके साथी और समाजवादी नेता मधु लिमये बताते हैं—"1967 के लोकसभा चुनाव में साही जी संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के भदोही लोकसभा सीट से उम्मीदवार थे। मुझे याद है कि साही जी लोकसभा का चुनाव अत्यंत ही कम पैसों में, बहुत अच्छे ढंग से लड़े थे। चुनाव अभियान को उन्होंने जनजागरण और लोकशिक्षा के अभियान के रूप में बदल दिया। दुर्भाग्य से उन्हें चुनाव में सफलता नहीं मिली।" साही बनारस के कबीरचौरा मोहल्ले में पले-बढ़े। कबीर चौरा में अधिकांशतः कायस्थ बसे थे या कथक। सिद्धेश्वरी बाई, कंठे महाराज, सितारा

देवी, अलकनंदा, गोपी कृष्ण, गुदई महाराज, किशन महाराज आदि विश्वविख्यात कलाकार कबीरचौरा के ही थे। इन सबका एक असर साही जी पर था। छंद या बहर दोनों में साही जी सधे हुए थे। रागों से उनका गहरा लगाव और परिचय था। कविताओं के अलावा उन्होंने बहुत ही अच्छे गीत और ग़ज़ल कहें हैं। खंभाज कहरवा और दादरा में उनके कई गीत हैं। प्रस्तुत है दादरा में उनकी एक ग़ज़ल 'खामोश धड़कनें' के दो बहर :

सोन मछली सा अँधेरी रात को पीता हुआ
जल रहा है दूर खंडहर के झरोखे पर चिराग़
एक मद्धिम सी उदासी कुछ-न-होने सी थकन
और दिल की पर्त में सहमा हुआ सुकुमार दाग़
ज़िंदगी कुछ इस कदर ख़ामोशियों से भर गयी
खोजता फिरता हूँ दिल का दर्द पर पाता नहीं
बोझ से जैसे झुकी जाती हैं पलकें बार-बार
और रोने में भी पहले सा मजा आता नहीं।

आज साही होते तो यह देखकर उदास हो जाते, गहरी रिक्तता से भर जाते कि साहित्य और आलोचना से बहसें नदारद हैं। साही ने अपने समय के साहित्य और आलोचना को बहस के केंद्र में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। 'परिमल' बनाम 'प्रगतीशील' आंदोलन की बहसें छठवें दशक की हिंदी आलोचना के सैद्धान्तिक निर्मिति की गवाह हैं। साही के लिए सबसे आकर्षक आलोचना वह है जो एक साथ बहुत सारे पहलुओं को उजागर करती चलती है। साही की आलोचना की तेजस्विता के मूल में वह पद्धति है जिसे ख़राद पर चढ़ना और चढ़ाना कहते हैं। सही मायनों में आलोचना साही के लिए एक बहस थी। उनका मानना था कि बहस से ही संवाद का रास्ता बनता है और एक नतीजे तक पहुँचा जा सकता है। साही ने अपने समय के साहित्य, राजनीति और सामाजिक समस्याओं पर इसी बहस के जरिए संवाद बनाने की जीवन भर कोशिश की। वे 'बहसों' में ख़ुद के पहले के लेखन और भाषण का भी अतिक्रमण कर जाते थे, इसकी चिंता उन्हें नहीं थी कि यह खुद में ही रद्दोबदल है। इस अर्थ में उनकी आलोचनात्मक पद्धति मार्क्सवादी हो जाती है। इसे मार्क्सवाद संबंधी उनके लेखों, धर्मनिरपेक्षता, लघुमनाव के बहाने हिंदी कविता पर एक बहस वाला लेख, साहित्यकार के दायित्व वाला व्यख्यान, शमशेर की काव्यनुभूति की समझ, जायसी के मूल्यांकन संबधी विचारों आदि में देखा जा सकता है। साही की निष्कवच बौद्धिकता उनकी आलोचनात्मक पहचान है। आलोचनात्मक प्रक्रिया और पद्धति में उनके यहाँ जो विश्लेषण और बहस की, चोखे जिरह की और उस जिरह के सहारे कुछ नए सूत्र तलाशने और पाने की दृष्टि है, वह स्पृहणीय है। वह ऐसी चोर जगहों में घुसकर सचाई को पकड़ने और उघाड़ने की कोशिश करती हुई आलोचना है, जो यह जानती है कि सचाई किसी की तरफ़ नहीं होती वह अपने आप में होती है। साही के चिंतन, मनन और लेखन की प्रक्रिया में आत्म-साक्षात्कार और दृष्टि-विस्तार केन्द्रीय पद हैं। इतिहास, परंपरा और आधुनिकता इस 'आत्म-साक्षात्कार' और 'दृष्टि-विस्तार' के तीन आयाम अथवा तीनों काल हैं। लोहिया जिस तरह से राजनीति में यह मानते थे कि जोख़िम की राजनीति करनी चाहिए सहूलियत की नहीं। साही के लिए साहित्यकारों पर भी यही बात लागू होनी चाहिए। साही से एक बार जब पूछा गया कि एक राजनीतिक कार्यकर्त्ता व मजदूर नेता और शुद्ध बौद्धिक व अकादमिक होने में क्या आप कोई अंतर्विरोध नहीं देखते? साही का ज़वाब था—"नहीं सारी बौद्धिक जिज्ञासा का तान यहीं टूटता है कि वैचारिक और व्यावहारिक आचरण